23 मार्च शहीद दिवस पर निबंध

प्रस्तावना:- शहीद दिवस भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर के साथ-साथ कई अन्य स्वतंत्रता सेनानियों की अपार देशभक्ति, साहस और निस्वार्थ कार्यों को याद करके मनाया जाता है, जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। यह दिन हमें अपने देश और उस स्वतंत्रता का सम्मान करने की याद दिलाता है जिसका हम आनंद लेते हैं जिसके लिए हजारों लोगों ने अपना खून बहाया है। उनका संघर्ष हर पीढ़ी को अपने ज्ञान, क्षमता और ऊर्जा को देश के विकास के लिए समर्पित करने और इसे नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रेरित करता है।

शहीद दिवस महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की पुण्यतिथि की याद दिलाता है। 23 मार्च 1931 को तीन नौजवानों को ब्रिटिश सरकार ने फांसी दे दी थी। भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर युवा आंदोलनकारी और महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे। ब्रिटिश सरकार के बहिष्कार का उनका तरीका एम के गांधी से अलग था। उन्होंने भारत से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए शारीरिक हिंसा का रास्ता चुना।भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर देश के युवा और उत्साही स्वतंत्र सेनानी थे, जिन्होंने देश को आजाद करने के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी थी।

उल्लेखनिय है कि भगत सिंह और उनके साथी सदस्यों पर ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जॉन सॉन्डर्स की हत्या का आरोप लगाया गया था।जिसे उन्होंने गलती से उसे मार डाला था। उन्होंने पुलिस अधिकारी जेम्स ए स्कॉट को मारने की योजना बनाई थी। पर उन्होंने जॉन सॉन्डर्स को गलत समझा और उसे मार डाला। भगत सिंह ने लाला लाजपत राय के प्रतिशोध के रूप में जेम्स ए स्कॉट को मारने की कसम खाई थी। साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाठीचार्ज में लाला लाजपत राय (पंजाब केशरी) गंभीर रूप से घायल हो गए थे और उनकी मृत्यु हो गई थी।ब्रिटिश पुलिस अधिकारी की हत्या के बाद भगत सिंह और उनके दो दोस्तों को पुलिस मुख्यालय में बम विस्फोट और इसी तरह की गतिविधियों में भी दोषी पाया गया था।

उनकी फांसी की तारीख 24 मार्च निर्धारित की गई थी। लेकिन ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें अपने षड्यंत्र में फंसा लिया और उनमें से तीन को 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी गई।बहुत कम उम्र में भगतसिंह,राजगुरु और सुखदेव से तीनों की मृत्यु हो गई थी। यह पूरे देश के लिए बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। जिसके विरोध में युवक सड़क पर उतर आए और जमकर विरोध जताया। पूरे देश में दंगे फैल गए थे। तीन बच्चों की जान लेने के लिए यह ब्रिटिश सरकार की क्रूरता थी। इन्हीं सब कारणों से 23 मार्च को शहीद दिवस के रूप में याद किया जाता है।

बहुत कम उम्र में भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर ने भारत में स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने का फैसला किया। वे लाला लाजपत राय के नेतृत्व में साइमन कमीशन के विरोध में शामिल हुए। दुर्भाग्य से लाला लाजपत राय 30 अक्टूबर को लाहौर में विरोध प्रदर्शन के दौरान लाठीचार्ज में गंभीर रूप से घायल हो गए और 17 नवंबर 1928 को उनकी मृत्यु हो गई। भगत सिंह सुखदेव थापर शिवराम राजगुरु, और चंद्र शेखर आज़ाद ने लाला लाजपत की हत्या का बदला लेने का संकल्प लिया। 17 दिसंबर 1928 को उन्होंने ब्रिटिश राज को एक कड़ा संदेश भेजने के लिए स्कॉट (जिसने लाला जी को मारने का आदेश दिया था) को मारने का फैसला किया। हालांकि, उन्होंने गलत पहचान के मामले में इसके बजाय जॉन सॉन्डर्स को गोली मार दी।

बाद में 8 अप्रैल 1929 को उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ केंद्रीय विधान सभा के अंदर लगभग खाली क्षेत्र पर बमबारी की। उन्होंने खुद को आत्मसमर्पण कर दिया और जून 1929 के पहले सप्ताह में अदालत में उनका मुकदमा शुरू हुआ। इस बमबारी का उद्देश्य मुकदमे के मीडिया कवरेज के माध्यम से गिरफ्तार होना और भारत में जनता तक पहुंचना था। बाद में, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर को उनके अन्य सहयोगियों के साथ

गिरफ्तार कर लिया गया। इन तीनों पर सॉन्डर्स मर्डर केस के लिए भी मुकदमा चलाया गया था, जिसे लाहौर षडयंत्र केस के रूप में भी जाना जाता है।

इस बीच, भगत सिंह और उनके साथियों ने भारतीय और यूरोपीय कैदियों के साथ समान व्यवहार की मांग को लेकर भूख हड़ताल शुरू कर दी। कपड़े, भोजन, स्वच्छता और अन्य सुविधाओं के मानक प्रकृति में भेदभावपूर्ण थे और भगत सिंह ने विरोध किया। ब्रिटिश भेदभाव के खिलाफ यह प्रतीकात्मक लड़ाई मीडिया में छाई रही और राष्ट्र ने युवाओं के साहस और उनके स्वतंत्रता आंदोलन के लिए परिश्रम के लिए सहानुभूति व्यक्त की।अंततः, तीनों पर मुकदमा चलाया गया और 23 मार्च 1931 को लाहौर जेल में विवादास्पद तरीके से तीनों को फांसी पर लटका दिया गया।

उनके शवों को जेल से निकाल दिया गया और गंडा सिंह वाला गांव में अंधेरे में अंतिम संस्कार किया गया और राख को सतलुज नदी में विसर्जित कर दिया गया। उनकी मृत्यु ने ब्रिटिश राज की क्रूरता के खिलाफ देश के युवाओं में नए सिरे से गुस्सा जगाया और भारत में अधिक जोरदार स्वतंत्रता आंदोलन को प्रज्वलित किया।